International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 03-04-2025, Accepted: 04-05-2025, Published: 19-05-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 13-16

लाइहराओबा और थाबलचोंबा: मणिपुरी संस्कृति के अनूठे पर्वों की सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक भूमिका

डॉ. चंदम इंगो सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, मणिपुर, भारत

सारांश
मणिपुर राज्य का सांस्कृतिक पर्व लाइहराओबा मैतेई समाज की परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक विरासत का प्रमुख अंग है। यह उत्सव स्थानीय वन देवताओं (उमंगलाई) की पूजा हेतु आयोजित किया जाता है जिसमें माइबा, माइबी और पेना खोंगबा द्वारा विविध धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। इस पर्व में सृष्टि की रचना, मानव जीवन की यात्रा और कृषि संस्कृति को गीतों, नृत्यों और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। लाइहराओबान केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है। इसके अंतर्गत चार प्रकार – कंलै, मोइराङ, ककचिङ और चकपा लाइहराओबा प्रचलित हैं।
थाबल चोंबा मणिपुर का एक पारंपरिक नृत्य है जो मूलतः चांदनी रात में सामूहिक रूप से वृत्ताकार होकर किया जाता है। यह पहले धार्मिक और सामाजिक आयोजनों का हिस्सा था, किंतु बाद में याओशंग (होली) उत्सव का अभिन्न हिस्सा बन गया। इसका नाम 'थाबल' (चांदनी) और 'चोंबा' (कूदना) से मिलकर बना है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, इसका संबंध सृष्टिकर्ता गुरु शिदबा और उनके पुत्रों से जुड़ा हुआ है, जिसमें यह नृत्य पाखंबा को बचाने के लिए भेजे गए देवताओं के माध्यम से आरंभ हुआ।
निष्कर्षतः लाइहराओबा और थाबल चोंबादोनों ही मणिपुरी समाज की गहरी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का प्रतीक हैं, जो परंपराओं को जीवित रखते हुए समुदाय में एकता, श्रद्धा और सांस्कृतिक गौरव का संचार करते हैं।

मूल शब्दः लाइहराओबा, थाबल चोंबा, मणिपुरी संस्कृति, धार्मिक अनुष्ठान, सामाजिक व सांस्कृतिक एकता

भारत के उत्तर–पूर्वी सीमा पर स्थित मणिपुर एक छोटा राज्य है, जिसकी साहित्य और संस्कृति में मणिपुरी लोगों की एक समृद्ध और गौरवशाली धरोहर है। थाबल चोंबा और लाइहराओबा मणिपुरी समाज के महत्वपूर्ण और अटूट संस्कृतिक पर्व हैं। ये पर्व मणिपुर के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के अभिन्न हिस्से हैं, जो प्रकृति और समाज के बीच संतुलन को दर्शाते हैं। इन पर्वों में मणिपुरी समाज की परंपराओं, रीति–रिवाजों और जीवन शैली परिलक्षित होती हैं। प्रस्तुत आलेख में मणिपुरी समाज में थाबल चोंबा और लाइहराओबा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक भूमिका के बारे में विवेचन किया जायेगा।

लाइहराओबाका संक्षिप्त परिचय

लाइहराओबा कृषि और प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े त्यौहार के रूप में मनाया जाता है, जिसमें देवी देवताओं की पूजा की जाती है और समुदाय की भागीदारी होती है। यह पर्व केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि समुदाय को एकजुट करने, पारंपरिक मूल्यों को सहेजने और सामाजिक समरसता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है।
लाइहराओबा मणिपुर की मैतै जाती का बहुत ही प्राचीन त्यौहार है। मैतेई जाति के लोग इसे बड़े हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाते हैं। इस त्यौहार का प्रारंभ कब हुआ इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। लोक कथाओं के अनुसार, देवताओं ने अपने वंशजों को इन अनुष्ठानों का पालन करने हेतु प्रेरित किया और सबसे प्रथम लाइहराओबा कौब्रू (मैतै लोगों के एक ईस्ट देवता का नाम है, साथ ही एक पवित्र पर्वत का नाम भी है) पर्वत पर आयोजित किया था।
यह त्यौहार अस्मृति काल से ही मैतै जाती के लोग पारम्परिक रूप से आज तक हर वर्ष मनाते आये हैं। यह त्यौहार वर्ष में एक बार मनाया जाता है। यह त्यौहार मणिपुर राज्य के मैतैसमाज के पुराने इतिहास और संस्कृति को दर्शाता है। इस त्योहार में शामिल होने के लिए लोगों को एक विशेष प्रकार का पारंपरिक पोशाक पहनना अनिवार्य है। इस त्यौहार में पारंपरिक नृत्य और गीत उमंगलाई (वनदेवताओं) के सामने अर्पित किए जाते हैं। लाइहरोओबा त्योहार में मैतैलोग अपने क्षेत्र विशेष के अनुसार विभिन्न स्थानीय उमंलाइ (स्थानीय वनदेवताओं) की प्रार्थना करते हैं। मैतै लोग अपने स्थानीय विशेष उमंलाइ को अपने इलाके का संरक्षक देवता के रूप में आराधना करते हैं। हर बस्ती या गाँव के अलग–अलग उमंलाइ होते हैं। लाइहराओबा का उत्सव विभिन्न स्थानों या बस्तियों में विभिन्न महीनों में मनाया जाता है। हर बस्ती के अपना–अपना अलग–अलग स्थानीय उमंलाई (वनदेवता) होता है। इन उमंगलाईयों के लिए साल में एक बार उनके मंदिरों में अनुष्ठान के साथ यह त्योहार अवश्य मनाया जाता है।
"लाइहराओबा" शब्द 'लाई' और 'हराओबा' के संयोजन से बना है। 'लाइ' का अर्थ है भगवान या देवता, जबकि 'हराओबा' का अर्थ है आनंदित करना या प्रसन्न करना। इस प्रकार, हिंदी में इसका शाब्दिक अर्थ "देवताओं का आमोद–प्रमोद" होता है।
लाइहराओबा मणिपुर का बहुत प्रतिष्ठित और पवित्र सामाजिक एवं धार्मिक त्योहार है। मैतै लोगों का मन्ना है कि यह पर्व दो हजार वर्ष पूर्व से विद्यमान है। यह मणिपुर की घाटी में रहने वाली मैतै जाति द्वारा स्थानीय वन देवी–देवताओं जिसे मणिपुरी में उमंलाइ कहते हैं, को प्रसन्न करने के लिए आयोजित पूजा और उत्सव का तरीका है।
लाइहराओबा उत्सव के दौरान माईबा (पुजारी), माईबी (पुजारिन, जिसे दिव्य शक्ति से परिपूर्ण माना जाता है), पेना (यह मणिपुर का एक पारंपरिक वाद्य यंत्र है, जो धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है) खोंगबा (पेना वादक) और स्थानीय समुदाय विशेष अनुष्ठानों व प्रार्थनाओं के साथ गीत गाते हुए नृत्य प्रस्तुत करते हैं, जिससे इस आयोजन की पवित्रता और परंपरा का निर्वहन होता है। इस उत्सव के अनुष्ठानों के आयोजन के लिए कठोर नियमों का पालन अनिवार्य होता है, क्योंकि किसी भी प्रकार की चूक को बड़ा अशुभ संकेत माना जाता है। इसलिए, इस त्योहार के सभी अनुष्ठान बड़ी संख्या में स्थानीय समुदायों, माईबा, माईबी और पेना खोंगबा द्वारा अत्यंत सावधानी पूर्वक संपन्न किए जाते हैं।

मैतै जाति के लोग लाइहराओबा उत्सव के माध्यम से अपनी प्राचीन संस्कृति को संजोए रखते हैं। यह उत्सव हर वर्ष मेरा (मणिपुरी कैलेंडर का एक महीना, जो अक्टूबर और नवंबर के बीच पड़ता है।) से प्रारंभ होकर इंङा (जून) महीने तक मनाया जाता है। साल में एक बार उमंलाइ (स्थानीय देवी–देवता) के लिए लाइहराओबा उत्सव का आयोजन अनिवार्य होता है। यह उत्सव 1, 3, 5, 7, 15 या 30 दिनों तक मनाया जा सकता है। वर्तमान में मोइरंग में यह उत्सव 15 दिनों तक मनाया जाता है, जबकि पूर्व में इसे 30 दिनों तक मनाया जाता था। आम तौर पर विभिन्न क्षेत्रों में यह त्योहार 3, 5, 7 या 15 दिनों तक आयोजित किया जाता है। कभी–कभी लाइहराओबा उत्सव को किसी अपरिहार्य कारणवश लंबे समय तक आयोजित करना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में, इसे एक ही दिन में संपन्न किया जाता है, जिसे "कुमचनबा" कहा जाता है।

मैतै समाज में चार प्रकार के लाईहराओबा प्रचलित हैं

1. **कंलै हराओबाः** मुख्य रूप से इंफाल और आस–पास की बस्तियों में आयोजित किया जाता है।

2. **मोइराङ हराओबाः** यह मोइराङ में मनाया जाता है।

3. **ककचिङ हराओबाः** यह ककचिङ में मनाया जाता है।

4. **चकपा हराओबाः** इसे अनङ्रो, फैयेङ, सेकमाइ, काउत्रुक, खुरखुल, लैमराम और ताइरेनपोकपि में मनाया जाता है।

सभी प्रकार के लाइहराओबा उत्सवों में संपन्न किए जाने वाले अनुष्ठान अधिकांशतः समान होते हैं। केवल कुछ वस्तुओं या भजनों में स्थान–विशेष और आराध्य देवता के आधार पर अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, इकोउबा (प्रतिष्ठा गीत), इकोउरोल (प्रतिष्ठा गीत का एक प्रकार) और याकाइरोल (जागरणगीत) त्योहार की शुरुआत में गाए जाते हैं, जबकि 'मिकोन थागोंबा' (समापन गीत यामंगल गीत) समापन के अवसर पर संपन्न किया जाता है।विशेष रूप से, इन भजनों के बोल स्थान–विशेष और आराध्य देवता के अनुसार भिन्न होते हैं।

लाइहराओबा उत्सव के पहले दिन विशेष वन देवताओं का अनुष्ठान संपन्न किया जाता है। इस अनुष्ठान के अंतर्गत बड़ी संख्या में स्थानीय समुदायों, माईबा, माईबी और पेना खोंगबा नदी या तालाब में जाकर देवताओं की आत्माओं का आह्वान करते हैं और उन्हें मंदिर में प्रतिष्ठित करते हैं। इस प्रक्रिया को 'लाई लौखतपा' अर्थात उद्घाटन समारोह कहा जाता है। इसके बाद उत्सव के दौरान हर सुबह पेना खोंबा द्वारा "याकाईरोल" (जागरणगीत) गाकर आराध्य देवता को जगाया जाता है। इस प्रकार दिन का धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ होता है।

उत्सव के दूसरे दिन से "लाईबौचोंबा" (एक अनुष्ठानिक नृत्य) अनुष्ठान प्रारंभ होता है। इस अनुष्ठान के दौरानमाईबा, माईबी और पेना खोंबाधरती की रचना प्रक्रिया से लेकर मानव के अविर्भाव तक की कथा को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। वे जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन के विभिन्न चरणों और सभी संस्कारों का वर्णन गीत और नृत्य के माध्यम से करते हैं, जिससे मानव जीवन की संपूर्ण यात्रा को दर्शाया जाता है।

लाइहराओबा उत्सव में गाए जाने वाले ऐसे गीतों को "लाइहराओबा इशै" कहा जाता है, जो प्रसिद्ध लोकगीत होते हैं। इन गीतों के बोलों में मानव सभ्यता के विकास के वर्णन के साथ–साथ यौन रहस्यवाद के गूढ़ संदर्भ भी समाहित होते हैं। इसकी प्रमुख विशेषता इसकी लय और धुन में निहित होती है, जो इसे विशेष रूप से प्रभावशाली बनाती है।

लाइहराओबा उत्सव के दौरान शुभ मुहूर्त निकालकर एक दिन के लिए आराध्य देवताओं को मंदिर से बाहर किसी खुले मैदान में ले जाकर उत्सव आयोजित किया जाता है। इसे "लाई लम थोक्पा" (अर्थात देवताओं का बाह्य भ्रमण) कहा जाता है। इस उत्सव में भी लाइहराओबा के सभी नित्य कार्यक्रम, लाइबौचोंबा सहित सभी अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं।

इसकी विशेषता यह है कि इसमें पान्थोइबी और नोंपोक्निन्थौके प्रेम का अभिनय द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। साथ ही, नृत्य के माध्यम से सृष्टि की रचना, मानव सभ्यता का विकास, कृषि से जुड़े मानव के कार्य, तथा मानव जाति के विकास हेतु संतान वृद्धि और काम–इच्छा आदि को संगीत एवं अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

लाईहराओबा के अंतिम दिन को "लाई रोई" (अर्थात समापन समारोह) कहा जाता है। समापन के दिन भी लाइबौचोंबा अनुष्ठान के साथ पान्थोइबी और नोंपोक निंथौके प्रेम प्रसंग को भी अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रस्तुति में विशेष रूप से पान्थोइबी और नोंपोक निंथौके अभिनय द्वारा कृषि संबंधी ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे मानव सभ्यता के विकास में कृषि की महत्ता को दर्शाया जाता है।

निष्कर्षतः लैहराओबा मणिपुर राज्य की मैतै जनसंख्या की एक पुरानी संस्कृति है। यह उमांलाई की पूजा करने की शैली है। यह मैतै लोगों का एक बहुत जटिल और महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। माइबा, माइबी और पेना खोंगबा लाइहराओबा के जटिल अनुष्ठान करते हैं।

लाइहराओबा मणिपुर के मुख्य उत्सवों में से एक है। इसे नृत्य का प्राचीन रूप कह सकते हैं, जो मणिपुर में सभी शैली के नृत्य के रूपों का आधार है। पूर्व–वैष्णव काल से इसका उद्भव हुआ था और आज भी यह मणिपुर में प्रस्तुत किया जाता है।

लाइ हराओबा पर्व श्रुति साहित्य, संगीत, नृत्य और परंपरिक अनुष्ठानों का अद्भुत संगम है। यह पारम्परिक सनमाही धर्म (मणिपुर में हिंदू धर्म के आगमन से पहले मैतेई लोगों का प्राचीन पारंपरिक धर्म) के देवताओं उमंलाई (वनदेवताओं) को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। यह नृत्य तथा गीत के एक आनुष्ठानिक अर्पण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । माइबा–माइबी (पुजारी और पुजारिनें) और पेना खोंबा (पेना बजानेवाला) मुख्य आनुष्ठानिक होते हैं, जो सृष्टि की रचना की विषय–वस्तु को दोबारा अभिनीत करते हैं।

इस उत्सव में सृष्टि मिथक का अनुष्ठानिक रूप में प्रदर्शन किया जाता है, जो मणिपुर की संपूर्ण संस्कृति को दर्शाता है और पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों के लोगों के बीच घनिष्ठ संबंधों को चित्रित करता है। यह धार्मिक ग्रंथों, पारंपरिक संगीत और नृत्य, पारंपरिक सामाजिक मूल्यों और प्राचीन सांस्कृतिक पहलुओं का एक अद्वितीय संगम है।

लाई लमथोक्पा और लाई रोई (अंतिम दिन) के दिनों मेंनोंपोक निंथौ और पान्थोइबी के प्रेम संबंधों के साथ–साथ मानव सभ्यता के विकास की कथा को चित्रित किया जाता है। सभी प्रकार के लाईहराओबा लाइहराओबा उत्सवों में यही अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं।

लाइहराओबा की सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक भूमिका

लाइहराओबा मणिपुर का एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पर्व है, जो मैतै जाति द्वारा बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सामाजिक भूमिका

लाइहराओबा उत्सव समाज को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाता है। इस पर्व के माध्यम से समुदाय के लोग पारंपरिक मूल्यों को संजोते हैं और एक–दूसरे से जुड़ते हैं। यह उत्सव न

केवल धार्मिक है, बल्कि यह सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देने का एक साधन है। विभिन्न समुदाय और गांव के लोग इस अवसर पर मिलकर पूजा–अर्चना करते हैं, नृत्य, संगीत और अनुष्ठान प्रस्तुत करते हैं, जिससे समाज में भाईचारे और सद्भाव का माहौल बनता है।

सांस्कृतिक भूमिका

लाइहराओबा मणिपुरी संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। यह उत्सव नृत्य, संगीत, लोककथाओं और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से मणिपुरी समाज की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखता है। उत्सव के दौरान गाए जाने वाले गीत, जैसे श्लाईहराओबा इशैश, मानव सभ्यता के विकास, सृष्टि मिथक और कृषि से संबंधित ज्ञान को प्रस्तुत करते हैं। यह त्योहार पारंपरिक संगीत और नृत्य का अद्वितीय संगम है, जो मणिपुर की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है।

धार्मिक भूमिका

लाइहराओबा पर्व मुख्य रूप से वनदेवताओं या 'उमंगलाई' की पूजा के लिए होता है। यह उत्सव स्थानीय देवताओं को प्रसन्न करने और उनकी आशीर्वाद प्राप्त करने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है। माईबा (पुजारी) और माईबी (पुजारिन) धार्मिक अनुष्ठानों का संचालन करते हैं, जो देवताओं की पूजा और आह्वान करते हैं। इस दौरान समुदाय के लोग अपने स्थानीय देवताओं के लिए विशेष प्रार्थनाएं और अनुष्ठान करते हैं। यह धार्मिक आयोजन समाज में आस्था और विश्वास को मजबूत करता है और लोगों को धार्मिक दृष्टिकोण से एकजुट करता है।

निश्कार्षत: लाइहराओबा केवल एक धार्मिक त्योहार नहीं है, बल्कि यह मणिपुर की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को संजोने और संरक्षित करने का एक प्रभावी तरीका है। इस पर्व के माध्यम से लोग अपनी पुरानी परंपराओं को याद करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। साथ ही, यह समाज में एकता, भाईचारे और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है, जिससे समुदाय के लोगों में आपसी सहयोग और समझ बढ़ती है।

थाबल चोंबा कासंक्षिप्त परिचय

थाबल चोंबानृत्य मणिपुरी समुदाय की सबसे प्रसिद्ध और प्रतीकात्मक सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। इसकी जड़ें मणिपुर की प्राचीन लोक परंपराओं और सामाजिक आयोजनों में हैं। प्रारंभ में, यह नृत्य मैतै समुदाय के धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों का हिस्सा था। इसे मुख्य रूप से बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक माना जाता था, जब चांदनी रात में लोग इकट्ठा होकर सामूहिक नृत्य करते थे। हिंदू धर्म के आगमन के बाद, जब मणिपुर में याओशं (होली) मनाई जाने लगी, तब से यह नृत्य होली उत्सव का एक अभिन्न हिस्सा बन गया। मणिपुर के लोग इस नृत्य को पाँच दिनों तक मनाते हैं।

पुराने समय में, यह नृत्य चांदनी रात में धार्मिक रीति–रिवाजों और विश्वासों पर आधारित लयबद्ध गीतोंके साथ किया जाता था। जैसे हीचंद्रमा पहाड़ियों के ऊपर उदय होता है,उत्सव मनाने वाले अपने संगीत वाद्ययंत्रों, झांझ, बांसुरी, ढोल और अन्य वाद्य यंत्रोंके साथ तैयार हो जाते हैं।

इस नृत्य के दौरान, लड़के और लड़कियाँ एक–दूसरे का हाथ पकड़कर वृत्ताकार रूप में नृत्य करते हैं, जो सामूहिक उल्लास और एकता का प्रतीक है।

यह जीवंत नृत्य रूप खुले आसमान के नीचे लोगों को एक वृत्त में एकत्र करता है, जो एकता, आनंद और समुदाय की सामूहिक पहचानका प्रतीक है।

थाबल चोंबा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मैतै लोगों का यह मानना है कि मणिपुर मेंथाबल चोंबाका प्रचलन सृष्टि के समय से चला आ रहा है। आजकल लोग इसे सामान्यतः युवक–युवतियों के मनोरंजन के रूप में नृत्य के रूप में देखते और समझते हैं, लेकिन मणिपुर के विद्वान इसका ऐतिहासिक महत्व मानते हैं। अगर इसके उत्पत्ति के बारे में विचार किया जाए तो इसके पीछे छिपे मूल भाव को समझना आवश्यक होगा।

थाबल चोंबा नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह नृत्य चांदनी रात में आयोजित किया जाता है। थाबल चोंबाशब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'थाबल' का अर्थ है चांदनी और 'चोंबा' का अर्थ है खुशी से कूदना।

पौराणिक कथा के अनुसार, इसका प्रारंभ गुरु शिदबा (सृष्टिकर्ता) ने सृष्टि के बाद अपने दोनों बेटों को बुलाकर यह निर्णय लेने के लिए कहा कि राजगद्दी पर कौन बैठेगा। इसके लिए उन्होंने पृथ्वी के चारों ओर सात बार चक्कर लगाने के लिए कहा। जो सबसे पहले लौटेगा, वही गद्दी का हकदार होगा।

अपने पिता की आज्ञा से, सनामही जो बड़े बेटे थे, बाघ पर सवार होकर पृथ्वी का चक्कर लगाने निकल पड़े। लेकिन इस बीच, जो छोटा बेटा शारीरिक रूप से कमजोर था, वह अपनी माँ के पास गया और अपने पिता की बातों को बताया। माँ ने उसे यह सलाह दी कि वह अपने पिता के आसन के चारों ओर सात बार चक्कर लगाए।

इस प्रकार, छोटे बेटे तुथेकप ने अपनी माँ के बताए अनुसार किया और वह पाखंबा (पिता को समझने वाला) उपाधि प्राप्त कर राजगद्दी पर बैठ गया। जब सनामही सफलतापूर्वक पृथ्वी का सात बार चक्कर लगाकर वापस आया, तो उसने देखा कि राजगद्दी पर उसका छोटा भाई बैठा हुआ है। यह जानकर सनामही का गुस्सा भड़क उठा और उसने पाखंबा को मारने के लिए उसका पीछा किया।

तभी गुरु शिदबा ने पाखंबा को बचाने के लिए नौ युवा देवताओं और सात युवा देवियों को भेजा। इन युवा देवी–देवताओं ने एक–दूसरे का हाथ पकड़कर गोलाकार बनाकर सनामही से पाखंबा को बचाया। इस क्रिया से बाद मेंथाबल चोंबा नृत्य का विकास हुआ।

थाबल चोंबा का एक और प्राचीन रूप है, जिसे औग्रि हंकेल कहा जाता है। यह नृत्य धार्मिक अनुष्ठान के साथ आयोजित किया जाता है। पुरानी मैतै भाषा में रसी को ष्औरीष् कहते हैं। इस नृत्य का विकास भी पुरानी पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है।

एक समय सनामही द्वारा बनाए गए शामतोन (अश्व) के शरीर में पाखंबा ने प्रवेश कर लिया था, जिसके कारण सनामही द्वारा निर्मित सभी सामानों का नाश होने लगा। तब नौ युवा देवता और सात युवा देवियाँ मिलकर उस अश्व को घेरकर उसे काबू करने में लगे। अंततः सनामही ने युवा देवी–देवताओं की मदद से अश्व के गले में रसी डालकर उसे पकड़ लिया।

सनामही और युवा देवी–देवताओं द्वारा पाखंबा की आत्मा प्रविष्ट अश्व को पकड़ने की यह प्रक्रिया ही औग्रि हंकेल नृत्य के रूप में विकसित हुई। यह नृत्य सनामही और युवा देवी–देवताओं द्वारा अश्व को पकड़ने की क्रिया–कलाप का अनुकरण करते हुए विकसित हुआ है।

औग्रि हंकेल और थाबल चोंबा भले ही बाह्य रूप से समान दिखते हों, लेकिन उनके नृत्य की प्रक्रिया, शारीरिक भंगिमा और अन्य पहलुओं में काफी अंतर है। थाबल चोंबा का कोई निश्चित समय नहीं होता। इसे किसी भी समय, विशेष रूप से चाँदनी रात में आयोजित किया जा सकता है। थाबल चोंबा में कोई भी युवा या युवती भाग ले सकता है। इसके लिए कोई विशेष संख्या या योग्यता की आवश्यकता नहीं होती। यदि नृत्य के दौरान कोई थक जाता है, तो वह आराम कर सकता है। इस नृत्य में कोई भी गीत गाया जा सकता है, क्योंकि इसके लिए कोई निर्धारित नियम नहीं होते।

थाबल चोंबा की उत्पत्ति का मूल "नोंखों कोइबा" (राजगद्दी के हकदार के लिए विश्व का चक्कर लगाने) नामक पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है।

इसके विपरीत, औग्रि हंकेल नृत्य के लिए भाग लेने वाले युवक और युवतियों की संख्या समान होनी चाहिए। एक ओर युवक खड़े होंगे और दूसरी ओर युवतियाँ। औग्रि हंकेल नृत्य करते समय भाग लेने वाला या वाली बीच में आराम नहीं कर सकते; उन्हें प्रारंभ से अंत तक लगातार भाग लेना होता है। इस नृत्य में शारीरिक रूप से कमजोर लोग भाग नहीं ले सकते।

औग्रि हंकेल में भाग लेने वाले युवक और युवतियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ और स्वच्छ होना चाहिए। साथ ही, उन्हें स्वच्छ, पवित्र वस्त्र पहनने चाहिए और उन खाद्य पदार्थों से परहेज करना चाहिए जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माने जाते हैं।

औग्रि नृत्य के लिए नृत्य स्थल में भाग लेने वाले लोगों के खड़े होने के लिए जो स्थान अधिग्रहित होगा, उसकी माप के अनुसार एक रसी गोलाकार बनाकर लटकाई जाती है। इसके दोनों सिरे जोड़कर एक घंटी भी लटकाई जाती है। इस गोलाकार में एक ओर माइबा (पुजारी या धर्मज्ञाता) नेतृत्व करते हुए युवक नृत्य करेंगे, जबकि दूसरी ओर माइबी (पुजारिन या धर्मज्ञाता) नेतृत्व करते हुए युवतियाँ नृत्य करेंगी। इस नृत्य के बीच में इशै हनबा (गायक) द्वारा गीत गाया जाएगा।

औग्रि हंकेल नृत्य के दो मुख्य उद्देश्य बताए गए हैं। पहला उद्देश्य राज्य की मंगल कामना, सुख–समृद्धि, शांति और विकास के लिए नृत्य का आयोजन करना है। इसमें नृत्य बड़े ही शालीनता से, कदम मिलाकर किया जाता है। दूसरा उद्देश्य राज्य में दुष्कर्मों को रोकने, अपराधियों को दंडित करने और राज्य को सुरक्षित रखने के लिए नृत्य आयोजित किया जाता है। इस प्रकार के नृत्य में उत्तेजक ढंग से, कदमों में बल देकर या पैर पटक कर और क्रोधपूर्ण भंगिमा के साथ नृत्य किया जाता है।

पहले प्रकार का औग्रि हंकेल आज भी लाइहराओबा के एक अभिन्न हिस्से के रूप में अंतिम दिन में आयोजित किया जाता है।

पुराने समय में, यह नृत्यचांदनी रात मेंधार्मिक रीति–रिवाजों और विश्वासों पर आधारित लयबद्ध गीतों के साथ किया जाता था। मणिपुर के लोग इस नृत्य को पाँच दिनों तक मनाते हैं।

थाबल चोंबाकी सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक भूमिका

थाबल चोंबा मणिपुरी समुदाय की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परंपरा है, जिसका गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। इसे न केवल एक पारंपरिक नृत्य के रूप में देखा जाता है, बल्कि यह मणिपुरी समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक भी है।

सामाजिक भूमिका

1. **समुदाय की एकता**: थाबल चोंबा नृत्य सामूहिक रूप से किया जाता है, जिसमें लड़के और लड़कियाँ एक–दूसरे का हाथ पकड़कर वृत्ताकार नृत्य करते हैं। इस नृत्य के माध्यम से समाज में एकता, सामूहिक उल्लास और सौहार्द बढ़ता है। यह सामूहिक सहभागिता का प्रतीक है, जो समुदाय को एक साथ जोड़ता है।

2. **सामाजिक सहभागिता**: इस नृत्य में बिना भेद–भाव के कोई भी व्यक्ति भाग ले सकता है। यह एक समानता की भावना को बढ़ावा देता है, क्योंकि नृत्य में कोई विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, और किसी को भी अवसर मिलता है।

3. **पारंपरिक सामाजिक आयोजनों में शामिल**: यह नृत्य विशेष रूप से मणिपुर के प्रमुख सामाजिक आयोजनों, जैसे याओशं (होली) में आयोजित किया जाता है, जो एक सामाजिक उत्सव का रूप लेता है। इस दौरान लोग सामूहिक रूप से इकट्ठा होकर अपने सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करते हैं।

सांस्कृतिक भूमिका

1. **प्राचीन लोक परंपरा**: थाबल चोंबा मणिपुर की प्राचीन लोक परंपराओं से जुड़ा हुआ है, और यह मणिपुरी समाज की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है। यह नृत्य मणिपुरी संस्कृति के गहरे संबंध को दर्शाता है, जिसमें प्रकृति, समाज और धार्मिक अनुष्ठान जुड़ी हुई हैं।

2. **संस्कार और शिक्षा**: थाबल चोंबा नृत्य एक शारीरिक अभ्यास के रूप में भी कार्य करता है, जो युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं के प्रति जागरूक करता है। यह उन्हें पारंपरिक नृत्य शैली और संगीत के महत्व को समझने में मदद करता है।

धार्मिक भूमिका

1. **धार्मिक अनुष्ठान**: थाबल चोंबा की उत्पत्ति धार्मिक कथाओं से जुड़ी हुई है, जैसे गुरु शिदबा और उनके बेटों के बीच हुई प्रतिस्पर्धा। नृत्य का एक रूप औग्रि हंकेल है, जो धार्मिक अनुष्ठान के साथ किया जाता है। इस नृत्य के दौरान दिव्य ऊर्जा का प्रवाह और सामाजिक सुख–समृद्धि की कामना की जाती है।

2. **होली और अन्य धार्मिक अवसरों पर**: थाबल चोंबा का विशेष रूप से होली (याओशंग) के दौरान आयोजन किया जाता है। यह नृत्य बसंत ऋतु के आगमन के साथ जुड़ा हुआ है, जो नए जीवन और नवीकरण का प्रतीक है। यह धर्म और संस्कृ ति के बीच एक मधुर संतुलन स्थापित करता है।

3. **दिव्यता का प्रतीक**: नृत्य के दौरान, देवता और देवियाँ एक–दूसरे का हाथ पकड़कर गोलाकार रूप में नृत्य करते हैं, जो समर्पण, श्रद्धा और दिव्यता का प्रतीक है। यह थाबल चोंबा की धार्मिक और पवित्र प्रकृति को भी दर्शाता है।

इस प्रकार, थाबल चोंबा नृत्य मणिपुरी समाज के धार्मिक, सांस्कृ तिक और सामाजिक जीवन में एक अभिन्न और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो न केवल परंपराओं को संरक्षित करता है, बल्कि समुदाय को एकजुट करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. डॉ. खुन्दोंबम गोकुलचंद्र (संपा.), २०१२, परिषदकी अरिबा साहित्यगी नैन–वारें, मणिपुर साहित्य परिषद, इम्फाल, पृ. १–१३
2. मोइराङथेम चन्द्रसिंह, (संप.) १९६३, पन्थोइबी खोंगुल, पृ. ४ – २०
3. लाइरेनमयुम इबुङोहल सिंह, २००८, मणिपुर
4. Parratt Saroj Nalini, The Religion of Manipur- Firma KLM (Pvt) Ltd, Calcutta, 1980.
5. Singh E Nilakanta. Fragments of Manipuri Culture. Omsons Publications, New Delhi, 1993.
6. RK Danisana. Manipuri Dances (A Panorama of Indian Culture) Rajesh Publications, New Delhi, 2012.